Topic - 19 प्रकृतिभाव संधि 2, प्रगृह्य

ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम् (प्रगृह्यम्)

ईदूदेदन्तं द्विवचनं प्रगृह्यसंज्ञं स्यात्।
हरी एतौ। विष्णू इमौ। गङ्गे अमू।
अदसो मात्।
अस्मात् परावीदूतौ प्रगृह्यौ स्तः। अमी ईशाः।
रामकृष्णावमू आसाते। मात्किम्- अमूकेऽत्र।

अदस् सर्वनाम है। इसके मकार से पर ईकार और ऊकार के उदाहरण पुंल्लिङ्ग में प्रथमा के बहुवचन (अमी) और प्रथमा तथा द्वितीया के द्विवचन (अमू) में एवं - स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा-द्वितीया के द्विवचन (अमू) में मिलते हैं। इनमें से - स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग वाले उदाहरणों में ईदूदेद् से प्रगृह्य संज्ञा सिद्ध हो जाती है। अतः प्रकृतसूत्र से केवल इसके पुंल्लिङ्ग 'अमू' और 'अमी' - इन दो रूपों के ही ईकार और ऊकार की प्रगृह्य (प्रगृह्य) संज्ञा होती है।